कथा रचना

विषय : .... इनमें से कौन है मेरा भाई ?

"भैय्या उठो, कितना देर हो गया है"। अमलू की बड़ी आवाज़ सुनकर वह अपनी आँखें बड़ी मुसीबत से खोला। सामने अमलू को देखकर अबू गुस्सा हो गया। "अरे लड़की, तू हमेशा ऐसे ही है?" "हाँ मैं ऐसा ही हूँ। माँ कितना देर से पहले बुलाती है"। इतनी कहकर अमलू बाहर गई। अबू खिड़कियों से बाहर देखा। सूरज की किरणों बहुत खुशी से पेड़-पौधों पर डाली थी। उन किरणें की दीप्ति से भीगे पत्ते पर पानी की नन्ही-नन्ही बूँदें चमकने लगा था। फूलों ने मुस्कुराहट भरे चेहरे से सूरज की ओर देखकर ठंडी हवा में नाचकर खड़े थीं। प्रकृति की सभी चीज़ें उषा को सुंदर बन गया।

अबू ने उठाकर रसोई की ओर चला। वहाँ माँ और अमलू के बीच के संवाद सुनते वक्त ही उसको याद आया कि दो दिन के बाद अमलू के साथ चेन्नै जाना है। माँ को आना नहीं सकता। अमलू और अबू अकेला ही जाऊँगे। अबू को देखकर माँ ने कहा "अबू दो दिन तो बाकी हैं। गाड़ी शाम को है। अमलू पर ज़रूर ध्यान पड़े। वो एक लड़की है। भूला मत।"

"मुझे मालूँ माँ" - अबू ने कहा।
"माँ क्यूँ इतनी परेशानी होती है। मेरी साथ भाई है न? और लड़की की संबंध खास मायना क्या है?
माँ ने चुप होकर डर भरी आँखों से खड़ी।

दो दिन के बाद की सुबह। अमलू बड़ी खुशी में थी। उसने सोचा "भैया नहीं होते तो क्याँ करेंगे? पापा की मृत्यू की बाद हमारी सहारा केवल वो ही है। उसकी पापा कहाँ होगा? उसको भी नहीं पता। माँ की गलत। उसका पिता अलग है। लेकिन उसकी तरह प्यार करनेवाली दूसरी आदमी नहीं होते है।'

शाम आ गई है। कमरे की दीवार पर टंगे क्लॉक ने कमरे को गुँजाते हुए छह- बज जाने की सूचना दी। घर से अबू और अमलू जाते देखकर माँ ने खड़ी। सड़क पर अंधकार फैला थी। गाड़ी मिलने के लिए कुछ देर चलने की आवश्य है। सड़क पर स्तब्ध बिजली के लैंपों ने ~~प्रकाश से~~ अंधकार से रुठकर प्रकाश नहीं दिया। फिर भी दो-एक लैंपों से आनेवाली प्रकाश से रास्ता देखना सकती थी। वह धुंधली प्रकाश से बारिश की बूंदें तारों की तरह चमकने लगे और पेड़-पौधों को

सजाकर दिया।

गाड़ी आयी। उसमें वे दोनों घुस गए और सीट पर बैठा। गाड़ी तेज़ से जाती थी। उनको दूसरी जगह से दूसरी गाड़ी मिलने को है। वहाँ पहुँचाए तो उन्हें खाना खाकर गाड़ी पर बैठा। गाड़ी की दूसरी किनारे किसी आदमी बैठी थी। उनकी बाल किसी पागल आदमी की तरह थी और आँखें लाल थी। उसका चेहरा देखकर अमलू को कुछ डर लगा। वह अपनी भाई की हाथों पकड़कर चुपचाप बैठा। लेकिन वह आदमी की लाल आँखें अमलू के पीछे आयी थी। भाई ने बैठकर सो रही थी। आदमी की निगाह अमलू की हृदय की आवाज़ बढ़ दिया। उसको अपनी माँ की आवाज़ याद आयी। बाहर बारिश तेज़ थी और गाड़ी के अंतर दूसरा कोई नहीं थी।

गाड़ी की धुंधली प्रकाश में वह आदमी की चेहरा ज़्यादा भयानक हो गयी थी। "भैया" अमलू बोलते तो भाई ने गहरा सोने की आगोश में थी।

कई घंटों के बाद अपनी जगह पहुँचा। लेकिन वह आदमी भी उनके पीछे थी। अमलू ने डरकर भाई

की साथ चलकर अपनी कमरे पर ~~उ~~ पहुँचा। लेकिन अमलू शोक सा लगा। आसपास की कमरे में वह आदमी घुसना। देखकर वह स्तब्ध खड़ी। कमरे की आसपास जगहों में दूसरी कोई नहीं थी। फिर भी वह भाई से कुछ नहीं कहा। सूरज की दीप्ति कमरे के अंतर आए वक्त अमलू ने उठाकर खिड़की के किनारे बैठा। उसको सो नहीं सकती थी।

उस सुनसान जगह में समय स्वयं यातना बन गई। फिर भी शाम आई और भैया कहा "अमलू मैं बाहर जाती हूँ। कुछ देर के बाद ही आऊँ।" "ठीक है भाई।" अमलू ~~निर्विकार~~ निरविकार से कहा। भाई बाहर गई और अमलू की दिल डर से भरी थी। उस वक्त कमरे में कोई परछाई चलते देखकर अमलू स्तब्ध हो गया। उस एकांत ~~जड़~~ जगह में कौन आया है? भाई नहीं है। अब क्या करूँ? इसी तरह कई ~~बातें~~ बातों सोचकर बैठते वक्त एक आदमी जो अपने चेहरा रुमाल से बंध किया उसके सामने आया। अमलू को लगा कि वह अभी ही मारा हो जाएगा। ~~उ~~ वह रूप देखकर

उसके दिल एकदम गाड़ी में दिखाया पागल आदमी की याद में डर हो गया। लेकिन सोचने की समय नहीं थी। वह आदमी क्रूर तरह से अमलू को मारा लेकिन उस बेचारी लड़की को रक्षा की कोई मार्ग नहीं थी। वह बड़ी आवाज़ में कराहना लगा। वह क्रूर मनुष्य की हाथों अमलू को अपनी आगोश में ले लिया। उनकी शरीर घायलों से व्रणित बन गया। उसकी कपड़े खून से लाल अ हो गया। अमलू की आवाज़ बारिश की शब्द में डूब गई।

अमलू की आधा बोध नष्ट हो गई थी। तब एक बड़ी आवाज़ से दरवाज़ा खुल गया। वह पागल आदमी। अमलू ने आधा खुला आँखों और थकी आवाज़ में मदद की ~~श~~ हाथों के लिए रोनी थी। वह पागल आदमी घायल पड़े अमलू को देखकर उसकी आसपास खड़ी रूमाल से बंधे चेहरेवाले की रूमाल हटाकर देखा। वह मनुष्य तेज़ से दौड़ने की कोशिश किया। फिर भी पराजय हो गया। अपनी भाई की चेहरा देखकर अमलू शोक सा लगा। "भैया...... तू....।" अमलू की आवाज़ निर्जीव

बन गई। वह 'भाई तेज़ से बाहर दौड़ गया'।
अमलू एक बार सोचा - 'इनमें से कौन है मेरा भाई?
वह पागल आदमी ने अमलू को अस्पताल ले
गई। माँ अपनी बेटी की हालत देखकर स्तब्ध
हृदय से बैठ गई। क्रूरता की वह रात अमलू को
भूलना न सका। वह याद उसकी हृदय पर बड़ी
घायल बन गई। कई दिनों की यातना के बाद
वह लौटने के लिए तैयार हो गई। तब भी वह
'पागल आदमी' वहाँ थी। उससे देखकर अमलू
ने अनुताप भरे आवाज़ से बुलाया 'भाई...'
लेकिन उन दोनों को बताने के लिए कुछ नहीं था।

अमलू की दिल पराजय के सामने थकाने
को तैयार नहीं थी। वह अपनी हालत एक सबक
बन गया। लड़कियों के लिए होती वह क्लास में
अमलू ~~ने की~~ ने इस विषय पर सिखाया -
'इनमें से कौन है मेरा भाई'!!